Machine Translated by Google

0850CH11

11 भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली

मैं

• क्या आप जानते हैं कि भारत प्राचीन काल से ही शिक्षा का केंद्र रहा है? हमें इस बारे में कैसे पता चला?

• भारत में शिक्षा की ऐतिहासिक उत्पत्ति के प्रमाण के रूप में पत्थरों और तांबे पर शिलालेख, ताड़ के पत्तों के अभिलेख और हमारे ग्रंथ मौजूद हैं। आज हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का पालन करते हैं जिसमें पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों और मूल्यांकन प्रथाओं के माध्यम से सीखना होता है। क्या आपने कभी सोचा है कि अतीत में ये कैसे होते थे? • इस फीचर स्टोरी में हम आपको हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली की झलक दिखाएंगे।

© NCERT not to be republished

परिचय

आपने सुना या पढ़ा होगा कि विभिन्न जलवायु और संस्कृति वाले विभिन्न क्षेत्रों से यात्री प्राचीन काल से ही भारत के कुछ हिस्सों का दौरा करने लगे थे। उनके लिए भारत आश्चर्य की भूमि थी! भारतीय संस्कृति, धन, धर्म, दर्शन, कला, वास्तुकला, साथ ही इसकी शैक्षिक प्रथाओं की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली को ज्ञान, परंपराओं और प्रथाओं का एक स्रोत माना जाता था जो मानवता का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन करती थी।

Machine Translated by Google

ऋग्वेद के समय से , हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली समय के साथ विकसित हुई और आंतरिक और बाहरी दोनों का ध्यान रखते हुए व्यक्ति के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया।

यह प्रणाली जीवन के नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहलुओं पर केंद्रित थी। इसमें विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी कृतियों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर दिया गया।

छात्रों को मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन की सराहना करना सिखाया गया। शिक्षण और सीखना स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा करने वाले वेदों और उपनिषदों के सिद्धांतों का पालन करते थे , इस प्रकार जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करते थे। शिक्षा प्रणाली सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर केंद्रित थी। दूसरे शब्दों में, स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर पर जोर दिया गया। आप देख सकते हैं कि भारत में शिक्षा व्यावहारिक, साध्य और जीवन की पूरक होने की विरासत रखती है।

शिक्षा के स्रोत

शिक्षा की प्राचीन प्रणाली वेद, ब्राह्मण, उपनिषद और धर्मसूत्र की शिक्षा थी। आपने आर्यभट्ट, पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि का नाम तो सुना ही होगा। उनके लेखन और चरक और सुश्रुत के चिकित्सा ग्रंथ भी सीखने के कुछ स्रोत थे। भेद भी निकाला गया

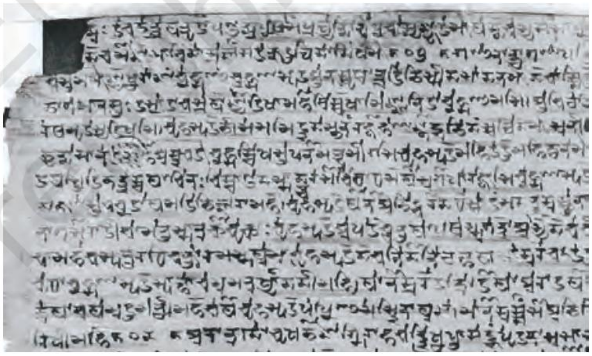

ऋग्वेद की पांडुलिपि* से एक पृष्ठ

© NCERT not to be republished

* ऋग्वेद की यह बर्च छाल पांडुलिपि कश्मीर में मिली थी। लगभग 150 साल पहले, इसका उपयोग ऋग्वेद के सबसे पुराने मुद्रित ग्रंथों में से एक , साथ ही एक अंग्रेजी अनुवाद तैयार करने के लिए किया गया था। यह अब पुणे, महाराष्ट्र की एक लाइब्रेरी में संरक्षित है। (कक्षा VI, हमारे अतीत-1, एनसीईआरटी, 2017) विरासत: कुछ ऐसा जो परंपरा के सिद्धांतों के रूप में अतीत से प्राप्त होता है : किसी धर्म या दर्शन के मुख्य सिद्धांत

Machine Translated by Google

शास्त्रों (सीखे गए अनुशासन) और काव्य (कल्पनाशील और रचनात्मक साहित्य) के बीच। सीखने के स्रोत इतिहास (इतिहास), आन्विकिकी (तर्क), मीमांसा (व्याख्या) जैसे विभिन्न विषयों से लिए गए थे।

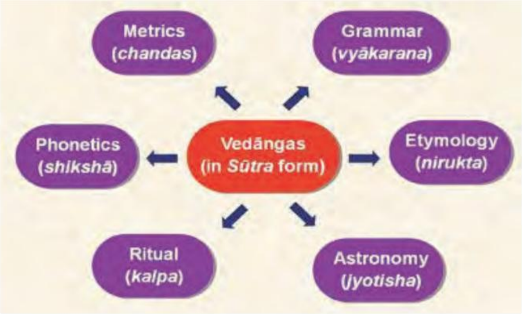

वेदों में शामिल विभिन्न विषयों का दृश्य मानचित्रण

शिल्पशास्त्र (वास्तुकला), अर्थशास्त्र (राजनीति), वार्ता (कृषि, व्यापार, वाणिज्य, पशुपालन) और धनुर्विद्या (तीरंदाजी)।

शारीरिक शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या क्षेत्र था और विद्यार्थियों ने क्रीड़ा (खेल, मनोरंजक गतिविधियाँ), व्यायामप्रकार (व्यायाम), मार्शल कौशल प्राप्त करने के लिए धनुर्विद्या (तीरंदाजी), और योगसाधना (मन और शरीर को प्रशिक्षित करना) में भाग लिया। गुरुओं और उनके शिष्यों ने सीखने के सभी पहलुओं में कुशल बनने के लिए कर्तव्यनिष्ठा से मिलकर काम किया।

विद्यार्थियों की शिक्षा का मूल्यांकन करने के लिए शास्त्रार्थ (सीखी गई बहस) का आयोजन किया गया। सीखने के उन्नत चरण में विद्यार्थियों ने युवा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। वहाँ सहकर्मी सीखने की प्रणाली भी मौजूद थी, जैसे आपके पास समूह/सहकर्मी कार्य है।

भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली - जीवन जीने का एक तरीका

प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरीके मौजूद थे। स्वदेशी शिक्षा घर पर, मंदिरों, पाठशालाओं, टोलों, चतुस्पदियों और गुरुकुलों में दी जाती थी। घरों, गांवों और मंदिरों में ऐसे लोग थे जो छोटे बच्चों को जीवन के पवित्र तरीके अपनाने में मार्गदर्शन करते थे। मंदिर भी शिक्षा के केंद्र थे और हमारी प्राचीन प्रणाली के ज्ञान को बढ़ावा देने में रुचि लेते थे।

छात्र उच्च ज्ञान के लिए विहारों और विश्वविद्यालयों में जाते थे।
शिक्षण मुख्यतः मौखिक था और छात्रों को कक्षा में जो पढ़ाया जाता था उसे याद रखते थे और उस पर मनन करते थे।

स्वदेशी: किसी विशेष स्थान पर प्राकृतिक रूप से उत्पन्न या घटित होना
विहार: बौद्ध मठ

© NCERT not to be republished

Machine Translated by Google

गुरुकुल, जिन्हें आश्रम भी कहा जाता है , शिक्षा के आवासीय स्थान थे। इनमें से कई का नाम ऋषियों के नाम पर रखा गया था। जंगलों में स्थित, शान्त एवं शांत वातावरण वाले गुरुकुलों में सैकड़ों छात्र एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे। प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को भी शिक्षा तक पहुंच प्राप्त थी। प्रमुख महिला वैदिक विद्वानों में, हमें मैत्रेयी, विश्वम्भरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा जैसे कुछ नामों का उल्लेख मिलता है।

उस अवधि के दौरान, गुरु और उनके शिष्य दैनिक जीवन में एक-दूसरे की मदद करते हुए रहते थे। मुख्य उद्देश्य पूर्ण शिक्षा प्राप्त करना, अनुशासित जीवन जीना और अपनी आंतरिक क्षमता को पहचानना था। छात्र अपने लक्ष्य प्राप्त करने तक वर्षों तक अपने घरों से दूर रहते थे। गुरुकुल वह स्थान भी था जहाँ गुरु और शिष्य का रिश्ता समय के साथ मजबूत होता गया । इतिहास, वाद-विवाद की कला, कानून, चिकित्सा आदि जैसे विभिन्न विषयों में अपनी शिक्षा प्राप्त करते समय, न केवल अनुशासन के बाहरी आयामों पर बल्कि व्यक्तित्व के आंतरिक आयामों को समृद्ध करने पर भी जोर दिया गया।

समझ की जाँच 1. यात्री भारत की ओर

क्यों आकर्षित हुए?

2. प्राचीन शिक्षा प्रणाली के स्रोत क्या थे?

3. प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली की विशेषताएं क्या थीं?

4. विद्यार्थियों के जीवन में गुरु की क्या भूमिका थी?

द्वितीय

• भाग I में आपने आश्रमों/गुरुकुलों की प्राचीन शिक्षा प्रणाली और उनमें रहने के तरीके के बारे में पढ़ा । • यह व्यवस्था बुद्ध के समय और उसके बाद के कालों में भी फलती-फूलती रही।

इस अवधि के दौरान ज्ञान की खोज के लिए भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए ध्यान करने, बहस करने और विद्वानों के साथ चर्चा करने के लिए कई मठ/विहार स्थापित किए गए थे। इन विहारों के आसपास उच्च शिक्षा के अन्य शैक्षणिक केंद्र विकसित हुए, जिन्होंने आकर्षित किया

मठ: वह स्थान जहां भिक्षु पंक्तिबद्ध होकर पूजा करते हैं

© NCERT not to be republished

Machine Translated by Google

चीन, कोरिया, तिब्बत, बर्मा, सीलोन, जावा, नेपाल और अन्य दूर देशों के छात्र।

विहार और विश्वविद्यालय

जातक कथाएँ, ज़ुआन ज़ैंग और आई-किंग (चीनी विद्वान) द्वारा दिए गए वृत्तांत, साथ ही अन्य स्रोत हमें बताते हैं कि राजाओं और समाज ने शिक्षा को बढ़ावा देने में सक्रिय रुचि ली । परिणामस्वरूप अनेक प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र अस्तित्व में आये। इस अवधि के दौरान विकसित होने वाले सबसे उल्लेखनीय विश्वविद्यालयों में तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, ओदंतपुरी और जगद्दला में स्थित थे। ये विश्वविद्यालय विहारों के संबंध में विकसित हुए । बनारस, नवदीप और कांची में मंदिरों के संबंध में विकास हुआ और वे उन स्थानों पर सामुदायिक जीवन के केंद्र बन गए जहां वे स्थित थे।

ये संस्थान उन्नत स्तर के छात्रों की जरूरतों को पूरा करते थे।
ऐसे छात्र उच्च शिक्षा केंद्रों से जुड़ते थे और प्रसिद्ध विद्वानों के साथ आपसी विचार-विमर्श और वाद-विवाद द्वारा अपना ज्ञान विकसित करते थे।

इतना ही नहीं, कभी-कभी राजा द्वारा एक सभा में भी बुलाया जाता था जिसमें देश के विभिन्न विहारों और विश्वविद्यालयों के विद्वान मिलते थे, बहस करते थे और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते थे।

इस भाग में हम आपको प्राचीन काल के दो विश्वविद्यालयों की झलक दिखाएंगे। इन विश्वविद्यालयों को दुनिया में शिक्षा के सर्वोत्तम केंद्रों में से एक माना जाता था। इन्हें हाल ही में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा विरासत स्थल घोषित किया गया है।

तक्षशिला या तक्षशिला

प्राचीन काल में, तक्षशिला कई शताब्दियों तक बौद्ध धर्म की धार्मिक शिक्षाओं सहित शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था। 5वीं शताब्दी ईस्वी में इसके नष्ट होने तक यह दुनिया भर के छात्रों को आकर्षित करता रहा। यह अपनी उच्चता के लिए जाना जाता था

© NCERT not to be republished

सम्मन: आधिकारिक तौर पर लोगों की एक बैठक की व्यवस्था करना
विश्वविद्यालय: उच्च शिक्षा संस्थान

Machine Translated by Google

शिक्षा और पाठ्यक्रम में प्राचीन धर्मग्रंथों, कानून, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, सैन्य विज्ञान और अठारह शिल्पों या कलाओं का अध्ययन शामिल था।

तक्षशिला अपने शिक्षकों की विशेषज्ञता के कारण शिक्षा के स्थान के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इसके प्रसिद्ध शिष्यों में प्रसिद्ध भारतीय व्याकरणविद् पाणिनि भी थे। वह भाषा और व्याकरण के विशेषज्ञ थे और उन्होंने व्याकरण पर अष्टाध्यायी नामक महानतम कृतियों में से एक की रचना की। जीवक, प्राचीन भारत के सबसे प्रसिद्ध चिकित्सकों में से एक, और चाणक्य (जिन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है), जो शासन कला के कुशल प्रतिपादक थे, दोनों ने यहीं अध्ययन किया था। लंबी और कठिन यात्रा के बावजूद छात्र काशी, कोसल, मगध और अन्य देशों से तक्षशिला आते थे।

का डाक टिकट
भारतीय वैयाकरण, पाणिनि

तक्षशिला एक प्राचीन भारतीय शहर था, जो अब उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में है। यह एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है और यूनेस्को ने 1980 में इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था। इसकी प्रसिद्धि विश्वविद्यालय पर टिकी हुई है, जहां कहा जाता है कि चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र की रचना की थी।

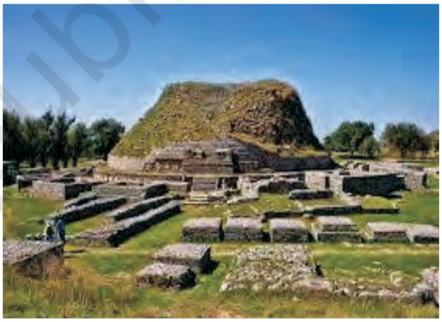

पुरातत्वविद् अलेक्जेंडर कनिंघम ने इसके खंडहरों की खोज की 19वीं सदी के मध्य में.

शिक्षक की भूमिका

छात्रों के चयन से लेकर उनके पाठ्यक्रम को डिजाइन करने तक सभी पहलुओं में शिक्षकों को पूर्ण स्वायत्तता थी। जब शिक्षक छात्रों के प्रदर्शन से संतुष्ट हो गए, तो पाठ्यक्रम समाप्त हो गया।

स्वायत्तता: अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्वतंत्रता, राज्यकला: किसी देश पर शासन करने का कौशल

© NCERT not to be republished

Machine Translated by Google

वह जितने चाहें उतने छात्रों को प्रवेश देते थे और वही पढ़ाते थे जो उनके छात्र सीखने के इच्छुक होते थे। वाद-विवाद और विचार-विमर्श शिक्षण के प्राथमिक तरीके थे। शिक्षकों को उनके उन्नत स्तर के छात्रों द्वारा सहायता प्रदान की गई।

नालंदा विश्वविद्यालय

जब जुआन जांग ने नालंदा का दौरा किया, तो उसे नाला कहा जाता था और यह विभिन्न विषयों में उच्च शिक्षा का केंद्र था।

जुआन जांग

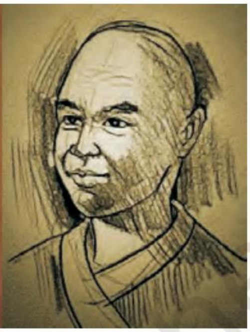

मैं-क्विंग

विश्वविद्यालय ने देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से विद्वानों को आकर्षित किया। चीनी विद्वान आई-किंग और जुआन जांग ने 7वीं शताब्दी ईस्वी में नालंदा का दौरा किया था। उन्होंने नालन्दा का विशद विवरण दिया है। उन्होंने नोट किया है कि बहस और चर्चा के तरीकों के माध्यम से विभिन्न विषयों में प्रतिदिन लगभग एक सौ प्रवचन होते थे। जुआन जांग स्वयं योगशास्त्र का अध्ययन करने के लिए नालंदा के छात्र बन गए । उन्होंने उल्लेख किया है कि नालंदा के कुलाधिपति, शीलभद्र, योग में सर्वोच्च जीवित विशेषज्ञ थे। नालन्दा विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित अध्ययन पाठ्यक्रमों में विस्तृत क्षेत्र शामिल था, उस समय उपलब्ध ज्ञान का लगभग पूरा दायरा। नालंदा में छात्रों ने वेदों का अध्ययन किया और उन्हें ललित कला, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, राजनीति और युद्ध की कला में भी प्रशिक्षित किया गया।

© NCERT not to be republished

प्राचीन नालंदा 5वीं शताब्दी ई. से 12वीं शताब्दी ई. तक शिक्षा का केंद्र था। वर्तमान राजगीर, बिहार, भारत में स्थित, नालंदा दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक था और यूनेस्को ने नालंदा महाविहार के खंडहरों को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था। नए नालंदा विश्वविद्यालय की परिकल्पना अंतर-सभ्यतागत संवाद के केंद्र के रूप में की गई है।

Machine Translated by Google

समुदाय की भूमिका

उस समय ज्ञान को पवित्र माना जाता था और कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। शिक्षा के प्रति योगदान को दान का सर्वोच्च रूप माना जाता था। समाज के सभी सदस्यों ने किसी न किसी रूप में योगदान दिया। वित्तीय सहायता अमीर व्यापारियों, अमीर माता-पिता और समाज से मिली। इमारतों के उपहार के अलावा, विश्वविद्यालयों को भूमि के उपहार भी मिले। मुफ़्त शिक्षा का यह रूप वल्लभी, विक्रमशिला और जगद्दला जैसे अन्य प्राचीन विश्वविद्यालयों में भी प्रचलित था।

उसी समय भारत के दक्षिण में, अग्रहारों ने सीखने और सिखाने के केंद्र के रूप में कार्य किया। दक्षिण भारतीय राज्यों में अन्य सांस्कृतिक संस्थाएँ भी थीं जिन्हें घाटिका और ब्रह्मपुरी के नाम से जाना जाता था।

घटिका धर्म सहित शिक्षा का केंद्र था और आकार में छोटा था । अग्रहार एक बड़ी संस्था थी, विद्वान ब्राह्मणों की एक पूरी बस्ती, जिसके पास सरकार की अपनी शक्तियाँ होती थीं और समाज से उदार दान द्वारा इसका रखरखाव किया जाता था। इस अवधि के दौरान मंदिर, मठ, जैन बसादियाँ और बौद्ध विहार भी शिक्षा के अन्य स्रोतों के रूप में मौजूद थे।

© NCERT not to be republished

भारतीय शिक्षा प्रणाली की निरंतरता

भारतीय शिक्षा प्रणाली आश्रमों, मंदिरों और स्वदेशी विद्यालयों के रूप में जारी रही। मध्यकाल में मकतब और मदरसे शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बन गए।

पूर्व-औपनिवेशिक काल के दौरान, भारत में स्वदेशी शिक्षा का विकास हुआ। यह उस औपचारिक प्रणाली का विस्तार था जिसने पहले जड़ें जमा ली थीं। यह प्रणाली अधिकतर धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का स्वरूप थी। बंगाल में टोल , पश्चिमी भारत में पाठशालाएँ , बिहार में चतुस्पदी और भारत के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के स्कूल मौजूद थे। दान के माध्यम से स्थानीय संसाधनों ने शिक्षा का समर्थन किया। ग्रंथों और संस्मरणों के संदर्भों से पता चलता है कि दक्षिण भारत में ग्रामीणों ने भी शिक्षा का समर्थन किया था।

जैसा कि हम समझते हैं, भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली छात्रों के आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती थी, इस प्रकार उन्हें जीवन के लिए तैयार करती थी। शिक्षा मुफ़्त थी और केंद्रीकृत नहीं थी। इसकी नींव समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में रखी गई थी

Machine Translated by Google

जिससे भारत के समग्र रूप से जीवन के भौतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और कलात्मक पहलुओं के विकास में मदद मिलती है।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली से बहुत कुछ सीखना है। इसलिए, सीखने को स्कूल के बाहर की दुनिया से जोड़ने पर जोर दिया जा रहा है। आज शिक्षाविद् बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शिक्षा की भूमिका और महत्व को पहचानते हैं, जिससे प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान को समकालीन शिक्षा से जोड़ा जा सके।

धारणा जांच

1. भिक्षुणियों और भिक्षुणियों ने अपनी शिक्षा कहाँ प्राप्त की?
2. पाणिनि किस लिए जाना जाता है?
3. जुआन ज़ैंग और आई-किंग ने किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया?
4. जुआन जांग ने भारत में किस विषय का अध्ययन किया?
5. समाज ने विद्यार्थियों की शिक्षा में किस प्रकार सहायता की?

व्यायाम

निम्नलिखित प्रश्नों पर छोटे समूहों में चर्चा करें और अपने उत्तर लिखें।

1. भारत की प्राचीन शिक्षा ... की किन प्रमुख विशेषताओं ने इसे विश्व स्तर पर प्रसिद्ध बनाया?
2. आपके अनुसार दूसरे देश... भारत क्यों अ... उस समय पढ़ाई करनी...
3. शिक्षा को 'जीवन जीने... तरीका' ... ना जाता है?
4. समग्र शिक्षा से आप क्या ... हैं?
6. आपके अनुसार तक्षशिल... लंदा को विरास... क्यों घोषित किया गय...

इस पर विचार

- अपने इ... और जानें। उस समय इ...

Machine Translated by Google

टिप्पणियाँ

© NCERT
not to be republished